



पाठ-चौबीस थाङ्-ता

अभिप्राय, पारंगत, ग्रहण, मल्लयुद्ध, निपुण, उल्लंघन, संयम, एकाग्रता, जितेन्द्रीयता, ब्रह्मचर्य, प्रशिक्षण, निहत्थे, शरणागत, सृष्टि।

थाङ्-ता मणिपुर की प्राचीन युद्ध-कला का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसमें 'थाङ्' का अर्थ है तलवार और 'ता' का अर्थ है भाला। इस प्रकार थाङ्-ता का अभिप्राय हुआ — तलवार और भाला चलाने की कला। पहले मणिपुर एक छोटा-सा स्वतंत्र राज्य था। इसकी जनसंख्या बहुत कम थी, इसलिए प्रत्येक नागरिक को युद्धकला में पारंगत होना अनिवार्य था। इसके बिना राज्य की रक्षा नहीं की जा सकती थी।

थाङ्-ता की शिक्षा ग्रहण करने के लिए व्यक्ति को स्वस्थ एवं बलवान होना आवश्यक है। थाङ्-ता की कला सिखाने से पहले गुरु अपने शिष्यों को 'सरीत सराक' नामक एक मल्लयुद्ध की कला सिखाता है। इस कला में निपुण होने के बाद थाङ्-ता की शिक्षा दी जाती है। थाङ्-ता सीखते समय खान-पान एवं रहन-सहन के विशेष नियमों का पालन अनिवार्य है। इन नियमों के उल्लंघन करने पर थाङ्-ता की कला में निपुण होना कठिन है। ऐसा लोक विश्वास भी है कि इन नियमों को अनदेखा करनेवाला व्यक्ति युद्ध में पराजीत होकर मर जाता है। इसलिए थाङ्-ता केवल अस्त्र-शस्त्र-ज्ञान की कला ही नहीं, बल्कि शरीर एवं मन को संयम में रखने की विद्य भी है। तन-मन की एकाग्रता, जितेन्द्रीयता और ब्रह्मचर्य का पालन थाङ्-ता की कला के लिए अनिवार्य हैं।



कहा जाता है कि थाङ्-ता की कला का प्रशिक्षण शनिवार से प्रारम्भ होना चाहिए। इसके लिए छात्र गुरु के पास जाता है और विधिवत शिक्षा प्रारम्भ होने के लिए भगवान की पूजा की जाती है। गुरु को प्रणाम करने के बाद पूजा की तलवार को अपने दाँतों से छूकर वह प्रतिज्ञा करता है कि थाङ्-ता की कला में निपुण होने के बाद कोई अनुचित या अनैतिक काम नहीं करेगा तथा अपनी मातृभूमि और राजा के प्राणों की रक्षा के लिए अपने प्राण-न्योछावर कर देगा। किसी निर्दोष और आम जनता की रक्षा जरूर करेगा। वह यह प्रण भी करता है कि कभी किसी निहत्थे पर वार नहीं करेगा, शरणागत की रक्षा करेगा और निर्दोष नागरिकों पर किए जानेवाले अत्याचारों का विरोध करेगा। इस प्रकार थाङ्-ता व्यक्ति को सच्चा नागरिक बनाने की शिक्षा है।

थाङ्-ता का पहला पाठ 'खोङ्फम-अहुम' कहा जाता है। खोङ्फम-अहुम का अर्थ है तीन कदम। ये तीन कदम प्रतीकात्मक भी माने जाते हैं और ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान मडाङ्, लुवाङ् और खुमन नामक देवता कहे गये हैं। इन्हें गुरु के समान कल्पित किया गया है। विश्वास किया जाता है कि मडाङ् गुरु सुबह के समय, लुवाङ् गुरु दोपहर के समय और खुमन गुरु रात के समय की रक्षा करते हैं। इसलिए खोङ्फम अहुम को इन्हीं तीन गुरुओं का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार थाङ्-ता तीन गुरुओं के समान २४ घंटे सतर्क रहने की कला है। मनुष्य के जीवन को तीन भागों में विभाजित किया जाता है, बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था। इन तीनों अवस्थाओं में जीने की कला भी थाङ्-ता की कला है। इसके साथ ही थाङ्-ता के तीन कदम भूत, भविष्य और वर्तमान के प्रतीक भी माने जाते हैं। इस रूप में थाङ्-ता भूत, भविष्य और वर्तमान में एक सफल व्यक्ति बनकर जीने की कला है। मणिपुर की अन्य कलाओं जैसे — नृत्यकला, मृदंग बजाने की कला और मुक्ना (एक विशेष प्रकार का मल्लयुद्ध) की कला आदि को भी थाङ्-ता के इन तीन कदमों की कला पर आधारित माना जाता है।

थाङ्-ता की कला में सब से महत्वपूर्ण भाग है, — थेंगौ। थेंगौ का शाब्दिक अर्थ है आह्वान। इस भाग में केवल तलवार और भाले की कला ही नहीं, दैविक कला भी सिखाई जाती है। शारीरिक शुद्धि करण के पश्चात, पाखंड्बा देवता के सर्प रूपवाले चित्र पर कदम रखकर विशेष स्थान एवं विशेष समय पर थेंगौ को सिखाया जाता है। लैनेत थेंगौ, लैचाङ् थेंगौ, लैसेम थेंगौ, लैताङ् थेंगौ आदि थेंगौ के उल्लेखनीय प्रकार हैं। मणिपुर के लोग मानते हैं कि भगवान सनामही ने संसार की सृष्टि करते समय थेंगौ का प्रयोग किया था।

आजकल थाड्-ता युद्ध कला के साथ ही एक विशेष खेल-कूद का विषय माना गया है। यह मणिपुर में ही नहीं, विश्व भर में प्रसिद्ध एक विशेष कला है। इस कला के प्रशिक्षण केन्द्र भारत के अन्य स्थानों एवं विदेशों में भी खुल गए हैं। मणिपुर के थाड्-ता जैसी युद्ध कलाएँ विश्व में और भी हैं, जैसे – केरेट, कराटे, कडूफू, टाइकुण्डो, ताइची, जुदो, जिका आदि। मानव-सभ्यता के विकास में इन सभी का ऐतिहासिक महत्व है।



प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझिए :

अभिप्राय	=	उद्देश्य, प्रयोजन, मतलब।
पारंगत	=	जिसने किसी विद्या या शास्त्र का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।
मल्लयुद्ध	=	कुश्ती, बाहुयुद्ध।
निपुण	=	चतुर, कुशल।
उल्लंघन	=	लौंघना; नियम, आज्ञा आदि को तोड़ना।
संयम	=	नियन्त्रण, इंद्रियनिग्रह।
एकाग्रता	=	एक ही भाव से लुप्त होने का भाव।
जितेन्द्रीयता	=	इन्द्रियों को जीतने का भाव।
ब्रह्मचर्य	=	वीर्यरक्षा, अविवाहित रह कर विद्यार्जन करने का समय।

प्रशिक्षण	=	ट्रेनिंग।
निहत्था	=	जिसके हाथ में कोई हथियार न हो, बिना हथियार का।
शरणागत	=	शरण में आया हुआ।
सृष्टि	=	निर्माण, संसार।

2. उत्तर दीजिए :

- (क) मणिपुर के प्रत्येक नागरिक को युद्धकला में पारंगत होना क्यों अनिवार्य था ?
- (ख) थाङ्-ता की शिक्षा कब दी जाती है ?
- (ग) थाङ्-ता सीखते समय किसका पालन करना अनिवार्य है ?
- (घ) थाङ्-ता कैसी विद्या है ?
- (ङ) थाङ्-ता की कला के लिए क्या-क्या अनिवार्य है ?
- (च) थाङ्-ता के प्रशिक्षण के लिए छात्र कौन-सी प्रतिज्ञा करता है ?
- (छ) खोङ्फम-अहुम को तीन गुरुओं का प्रतीक क्यों माना जाता है ?
- (ज) मनुष्य जीवन कितने भागों में विभाजित किया जाता है और वे क्या-क्या हैं ?
- (झ) थेंगौ क्या है ?
- (ञ) थेंगौ के कौन-कौन से प्रकार होते हैं ?
- (ट) सनामही ने कब थेंगौ का प्रयोग किया था ?
- (ठ) थाङ्-ता जैसी विश्व में प्रचलित अन्य कुछ युद्ध कलाओं के नाम बताइए।
- (ड) मानव सभ्यता के विकास में युद्ध-कलाओं के ऐतिहासिक महत्व के बारे में आप क्या जानते हैं ?

3. वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अभिप्राय -----

जनसंख्या -----

पारंगत -----

निपुण -----

उल्लंघन -----

संयम -----
 प्रशिक्षण -----
 निहत्था -----
 सृष्टि -----
 शरणागत -----

4. तालिका को देखिए और वाक्य बनाइए :

थाङ्-ता	प्राचीन युद्धकला का एक अंग केवल अस्त्र-शस्त्र-ज्ञान की कला नहीं व्यक्ति को सच्चा नागरिक बनाने की शिक्षा का पहला पाठ खोङ्फम अहुम कहा जाता विश्व भर में प्रसिद्ध एक विशेष कला	है।
---------	---	-----

5. सही कथन के आगे (✓) का निशान और गलत कथन के आगे (X) का निशान लगाइए :

- (क) थाङ्-ता की शिक्षा ग्रहण करने के लिए व्यक्ति को स्वस्थ एवं बलवान होना आवश्यक है। ☐
- (ख) थाङ्-ता की कला का प्रशिक्षण किसी भी दिन से प्रारम्भ हो सकता है। ☐
- (ग) खोङ्फम अहुम को तीन गुरुओं का प्रतीक माना जाता है। ☐
- (घ) आजकल थाङ्-ता एक विशेष खेल-कूद का विषय बन गया है। ☐

6. खाली जगह भरिए :

- (क) युद्धकला के बिना ----- सकती थी।
(ख) प्रशिक्षण के लिए छात्र ----- जाता है।
(ग) निर्दोष नागरिकों पर ----- विरोध करेगा।
(घ) मानव-सभ्यता के विकास में ----- है।

7. पढ़िए और समझिए :

थाड़-ता	=	थाड़ और ता
अस्त्र-शस्त्र	=	अस्त्र और शस्त्र
तन-मन	=	तन और मन
सुख-दुख	=	सुख और दुख
दिन-रात	=	दिन और रात
नर-नारी	=	नर और नारी
माँ-बाप	=	माँ और बाप
राजा-रंक	=	राजा और रंक
पाप-पुण्य	=	पाप और पुण्य
जन्म-मरण	=	जन्म और मरण

8. ध्यान से पढ़िए, समझिए और याद रखिए :

हिन्दी में प्रचलित प्रमुख विराम-चिह्न निम्नांकित हैं –

(1) पूर्ण विराम (।)

प्रश्नवाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर शेष सभी प्रकार के वाक्यों की पूर्णता प्रकट करने के लिए पूर्ण विराम का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

वह मेरा लड़का है।

जल्दी वापस आओ।

अभी तक हमने कुछ भी नहीं खाया है।

शायद वह आ जाता।

(2) प्रश्नसूचक चिह्न(?)

प्रश्नवाचक वाक्यों के अन्त में इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे –

तुम्हारा नाम क्या है ?

वह कौन था ?

तुम कब आओगे ?

(3) विस्मयादिबोधक चिह्न (!)

हर्ष, शोक, घृणा, भय, आश्चर्य आदि को प्रकट करने के लिए कभी तो विस्मयादिबोधक शब्द के बाद और कभी वाक्य के बाद इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे –

हाय! मेरा तो सब कुछ लूट गया

अरे ! तुम आ गए !

छि: ! छि: ! इसे यहाँ से हटाओ।

(4) अल्प विराम (,)

इस चिह्न का प्रयोग विभिन्न स्थितियों में होता है। जैसे –

(क) एक ही तरह के कई पदों, पदबन्धों या उपवाक्यों के किसी एक वाक्य में आने पर—
मोहन, श्याम, राजेन और साजौ खेलने गए।

व्यायाम करना, काम करना और आराम करना एक ही समय में नहीं हो सकता।
मैं जल्दी उठा, चाय पी ली और चला गया।

(ख) 'हाँ', 'नहीं' और सम्बोधन शब्द के बाद —
हाँ, वह मेरा भाई है।

नहीं, मैं यह काम नहीं करूँगा।

अमुचौ, तुम जरूर आना।

(ग) क्योंकि, लेकिन, कारण, फिर, नहीं तो, इसलिए आदि समुच्चयबोधक के पहले—
आज छुट्टी है, क्योंकि रविवार है।

तुमने मुझे बुलाया, इसलिए मैं आया हूँ।

मेरी बात मानो, नहीं तो परिणाम बुरा होगा।

(घ) किसी वाक्य को उद्धृत करते समय उससे पहले —
चाओबा ने कहा, 'मैं यह काम जरूर करूँगा'।

(5) अर्ध विराम (;)

जब अल्प विराम से अधिक, किन्तु पूर्ण विराम से कम रुकना हो, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे —
वह कब लौटेगा; बता नहीं सकता।

(6) निर्देशक (—)

इस चिह्न का प्रयोग प्रायः निर्देश के लिए होता है।

(क) किसी प्रकार की सूची के पहले —

दशरथ के चार पुत्र थे — राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।

(ख) वार्तालाप सम्बन्धी लेखों में वक्ता के नाम के बाद —

मोहन — राम, आज रविवार है।

राम — हाँ, आज का कार्यक्रम बताओ।

मोहन — शाम को सिनेमा देखने चलेंगे।

राम — जरूर।

(7) योजक (-)

इसका प्रयोग समस्त-पदों में होता है। जैसे —

माँ-बाप

दिन-रात

(8) कोलन (:)

इस चिह्न का प्रयोग किसी शब्द की विशेषता बताने में या स्पष्ट करने के लिए होता है।
जैसे —

वन : हमारी प्राकृतिक सम्पदा

भारत : एक आदर्श देश

(9) अवतरण या उद्धरण चिह्न (“ ”)

किसी उक्ति, शब्द या वाक्य को उद्धृत करते समय इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—
पिताजी सदा कहते थे, “बेटा, तुम बाद में पछताओगे।”

(10) कोष्ठक (())

किसी पद का दूसरा रूप, अर्थ, स्पष्टीकरण या अतिरिक्त सूचना देते समय इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

सभी लोगों ने गुरुदेव (स्वीन्द्रनाथ ठाकुर) की बहुत प्रशंसा की।

(11) लाघव चिह्न (.)

किसी शब्द का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए उस शब्द के पहले अक्षर के बाद इस चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे—

पं. नेहरू

मि.कुमार

यू.एन.ओ.

9. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए :

(क) नदी वाले तालाब सब पानी से भर गए

(ख) सूर्य का उदय हुआ चिड़ियाँ चहचहाने लगीं किसान खेत की ओर गया

(ग) तुमने ऐसा क्यों कहा मैंने पूछा

(घ) हाय राम उसकी कैसी दशा है

(ङ) इस बार मैंने एम ए की परीक्षा दी

(च) मेरी बात सुनो जल्दी लौट आना

(छ) लिंग के दो प्रकार हैं पुल्लिंग और स्त्रीलिंग

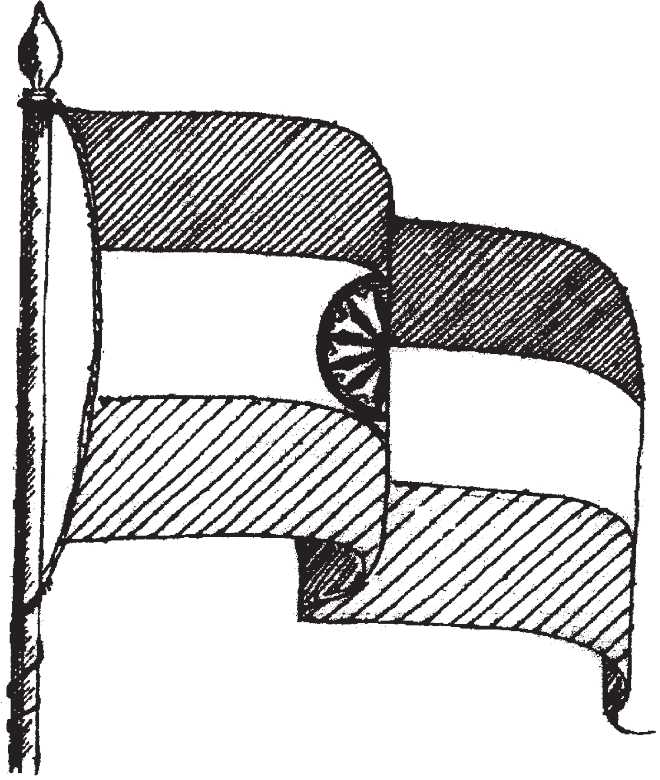
(ज) यह भवन एक करोड़पति सेठ रामदास ने बनवाया था

(झ) वह माँ बाप का लाड़ला बेटा है

(ञ) उन्होंने कहा हम जरूर जीतेंगे

राष्ट्रगान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग
विंध्य-हिमांचल, जमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा ।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।



नागरिकों के मूल कर्तव्य

प्रत्येक नागरिक —

- क. संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
- ख. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।
- ग. भारत की संप्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे।
- घ. देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।
- ङ. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे, जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों।
- च. हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।
- छ. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्दर वन, झील, नदी और वन्य-जीव हैं — रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखें।
- ज. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
- झ. सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहे।
- ञ. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।